

# इलायजा - नंबर पाँच

भविष्यसूचक मौन

Jeff Pippenger

2023-10-03

जब एलिय्याह ने अहाब से समस्त इस्राएल को कर्मेल पर बुलवाया, तो वह इस बात की पूर्वछाया थी कि परमेश्वर तीन और आधे वर्ष के उत्पीड़न के बाद 1798 में कलीसिया को अंधकार युग से बाहर निकालेगा और उसे 1844 तक, और उसके बाद 1863 तक ले जाएगा। ये तीनों तिथियाँ “सात समय” की संरचना के अंतिम तीन मार्ग-चिह्न हैं, जैसा कि यशायाह ने अध्याय सात में प्रस्तुत किया है।

1798, 1844 और 1863 के उसी इतिहास का प्रतिरूप तब भी दिखाई देता है जब मूसा ने इस्राएलियों को मिस्र की दासता से निकालकर सीनै पर्वत तक पहुँचाया। पहले और दूसरे स्वर्गदूतों का इतिहास मिलेराइट आंदोलन का प्रतिनिधित्व करता है, जो 1798 में अंत के समय आरंभ हुआ और 1863 में यह आंदोलन कलीसिया बन जाने तक जारी रहा। एलिय्याह और मूसा मिलेराइट इतिहास के दो प्रमुख गवाह हैं, और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में तीसरे स्वर्गदूत के इतिहास के दौरान भी वही दो प्रमुख गवाह हैं।

मिलेराइट आंदोलन प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह के अनन्त सुसमाचार की शुरुआत को चिह्नित करता है, और फ्यूचर फॉर अमेरिका उसकी समाप्ति को। मिलेराइट्स के प्रारंभिक आंदोलन और अंतिम आंदोलन के बीच हमें सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया मिलती है। एडवेंटिस्ट कलीसिया के इतिहासकारों के अनुसार, 1856 में मिलेराइट आंदोलन के शेषजन लाओदीकियाई अवस्था में प्रवेश कर गए, और इस प्रकार 1798 से 1856 का प्रतिनिधित्व करने वाले फिलाडेल्फिया काल का अंत हो गया।

पिछले लेख में हमने दिखाया कि प्रेरणा ने लाल सागर पार करने से जुड़ी निराशा का 1844 की महान निराशा से मेल बिठाया। उसी समय मूसा के इतिहास में, मन्ना द्वारा प्रतीकित सब्त की परीक्षा आ पहुँची। उसी भविष्यसूचक बिंदु पर, परमपवित्र स्थान से आया प्रकाश ने, समुद्र पार कर चुके और विश्वास से परमपवित्र स्थान में प्रवेश कर चुके लोगों के लिए, सब्त से शुरू होने वाली परीक्षा और शुद्धि की प्रक्रिया आरंभ की। 1844 से पहले वाली परीक्षात्मक प्रक्रिया मूसा के इतिहास में उसके जन्म से ही शुरू हुई; और मिलेराइटों के लिए, वह 1798 में उस ज्ञान-वृद्धि के साथ आरंभ हुई, जिसके बारे में दानिय्येल ने संकेत किया था कि वह न्याय तक ले जाने वाली तीन-चरणीय परीक्षात्मक प्रक्रिया उत्पन्न करेगी।

बहुत से लोग शुद्ध किए जाएंगे, उजले बनाए जाएंगे, और परखे जाएंगे; परन्तु दुष्ट तो दुष्टता ही करेंगे; और दुष्टों में से कोई नहीं समझेगा; परन्तु बुद्धिमान समझेंगे। दानिय्येल 12:10.

22 अक्टूबर, 1844 को न्याय का उद्घाटन, उस न्याय द्वारा प्रतिरूपित था जो फिरौन पर आया—जो मिस्र के पहलौठों से शुरू होकर लाल सागर के जल में समाप्त हुआ। जब बुद्धिमान विश्वास से अति-पवित्र स्थान में प्रवेश कर गए, या लाल सागर को पार कर गए, तब 1798 में अंत के समय पर आरंभ हुई परीक्षा की प्रक्रिया 1844 के बाद भी जारी रही। मूसा  $\geq$  इतिहास में यह दस परीक्षाओं द्वारा दर्शाया गया था, जिनमें इस्राएल हर कदम पर असफल रहा। इन दस परीक्षाओं में अंतिम तब थी जब बारह जासूसों ने प्रतिज्ञात देश की टोह ली। मूसा के इतिहास में पहली परीक्षा मन्ना की परीक्षा थी जो सब्त का प्रतिनिधित्व करती है, और मिलेराइटियों के लिए 22 अक्टूबर, 1844 के बाद पहली परीक्षा के रूप में सब्त की पहचान की गई। दोनों समानान्तर इतिहासों में पहली परीक्षा सब्त होने के कारण, मूसा के इतिहास की अगली नौ परीक्षाएँ यह दर्शाती हैं कि 1844 के बाद परीक्षाओं की एक श्रृंखला होगी जो या तो प्रतिज्ञात देश में प्रवेश तक या मृत्यु के मरुस्थल तक ले जाएगी। 1863 मिलेराइटी आंदोलन की अंतिम परीक्षा का प्रतिनिधित्व करता है। हम इस विचार-विमर्श की शुरुआत तब करेंगे जब बारह जासूस प्रतिज्ञात देश की अपनी रिपोर्ट लेकर लौटते हैं।

और वे चालीस दिन तक देश की जाँच-पड़ताल करके लौट आए। और वे जाकर मूसा और हारून और इस्राएलियों की सारी मण्डली के पास पारान के जंगल में, कादेश को आए; और उन्होंने उनके पास तथा सारी मण्डली के पास समाचार पहुँचाया, और उन्हें देश के फल दिखाए। और उन्होंने उससे कहा, हम उस देश में पहुँचे जहाँ तू ने हमें भेजा था; निश्चय ही वह दूध और मधु से बहता देश है, और यह उसका फल है। तौभी उस देश में रहने वाले लोग बलवन्त हैं, और शहरों के चारों ओर दीवारें हैं, और वे बहुत बड़े हैं; और इसके अलावा हमने वहाँ आनाक के पुत्रों को भी देखा। दक्षिण के देश में अमालेकी रहते हैं; और पहाड़ियों में हित्ती, यबूसी और एमोरी रहते हैं; और समुद्र के किनारे और यरदन के तट पर कनानी रहते हैं। तब कालेब ने मूसा के सामने लोगों को शांत किया और कहा, आओ, हम तुरंत चढ़ाई करें और उसे अधिकार में लें; क्योंकि हम निश्चय ही उस पर विजय पाने में समर्थ हैं। परन्तु जो मनुष्य उसके साथ गए थे, उन्होंने कहा, हम उन लोगों के विरुद्ध चढ़ने में समर्थ नहीं हैं, क्योंकि वे हमसे अधिक बलवान हैं। और उन्होंने उस देश के विषय में, जिसकी उन्होंने जाँच-पड़ताल की थी, इस्राएलियों के पास बुरा समाचार पहुँचाया, कहते हुए, जिस देश में हम उसे टटोलने को गए थे, वह ऐसा देश है जो अपने निवासियों को खा जाता है; और वहाँ जो लोग हमने देखे, वे सब बड़े कद के पुरुष हैं। और वहाँ हमने दानवों को, अर्थात् आनाक के पुत्रों को, जो दानवों से उत्पन्न हैं, देखा; और हम अपनी दृष्टि में टिट्टों के समान थे, और वैसे ही हम उनकी दृष्टि में भी थे। गिनती 13:25-33.

गिनती के इस अंश में कुछ बहुत महत्वपूर्ण सत्य हैं जिन पर ध्यान देना चाहिए, जो आसानी से नज़रअंदाज़ हो सकते हैं, विशेषकर जब उसमें निहित इतिहास को मिलराइट आंदोलन का प्रतिरूप मानकर नहीं देखा जाता। एक बात यह है कि "बुरी चर्चा" फैलाने वाले विद्रोही अपनी दसवीं और अंतिम परीक्षा में असफल हो रहे थे, और उसी अंतिम परीक्षा में लोगों के दो वर्ग प्रकट हुए। पिछली नौ परीक्षाओं के इतिहास के दौरान विकसित होते आए इन दो वर्गों ने, जिस "रिपोर्ट" को स्वीकार करने का उन्होंने चुनाव किया था, उसके आधार पर अपना चरित्र प्रकट किया। 1863 में, मिलराइट एडवेंटिज़्म ने मूसा की "रिपोर्ट" को अस्वीकार कर दिया, जैसा कि लैव्यव्यवस्था अध्याय छब्बीस में दासत्व की भविष्यवाणी द्वारा प्रस्तुत किया गया था। यहोशू और कालेब द्वारा प्रस्तुत "रिपोर्ट" तो बस परमेश्वर की "रिपोर्ट" की पुनरावृत्ति थी, जो उनके दासत्व से छुड़ाए जाने के इतिहास भर में मिलती रही। मूसा के जन्म से ही परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि वह उन्हें दासत्व से निकालकर उस देश में ले जाएगा जिसका वादा सदियों पहले अब्राहम से किया गया था। यहोशू और कालेब उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो मूलभूत "रिपोर्ट" पर दृढ़ रहे; जबकि बाकी दस गुप्तचरों ने यह मानने से इंकार कर दिया कि परमेश्वर ने वास्तव में वह "रिपोर्ट" दी थी।

तब सारी सभा ने अपनी आवाज़ ऊँची की और चिल्लाई; और लोग उस रात रोए। और इस्राएल के सब लोगों ने मूसा और हारून के विरुद्ध बड़बड़ाया; और पूरी सभा ने उनसे कहा, काश हम मिस्र देश में ही मर गए होते! या काश हम इस जंगल में ही मर गए होते! यहोवा ने हमें इस देश में क्यों लाया है, कि हम तलवार से गिरें और हमारी स्त्रियाँ और हमारे बच्चे लूट बनें? क्या हमारे लिये मिस्र को लौट जाना बेहतर नहीं? और वे आपस में कहने लगे, आओ, हम अपने लिये एक प्रधान ठहराएँ और मिस्र को लौट चलें। गिनती 14:1-4.

जब 1863 में जेम्स व्हाइट ने रिव्यू एंड हेरल्ड में एक लेख लिखकर मिलर की "सात समय" की समझ को अस्वीकार किया, और उसी वर्ष उरियाह स्मिथ ने वह जाली चार्ट प्रकाशित किया जिसमें लैव्यव्यवस्था के "सात समय" का कोई उल्लेख नहीं था, तब व्हाइट और स्मिथ दोनों ने विलियम मिलर के कार्य को अलग रख दिया और धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद की बाइबलीय पद्धति को अपनाया। जिन धर्मत्यागियों को उन्होंने हाल ही में "बाबुल की पुत्रियाँ" के रूप में पहचाना था, उनकी पद्धति को ही स्वर्गदूत गब्रिएल द्वारा निर्देशित मिलर के संदेश को अस्वीकार करने के तर्क के रूप में अपनाया गया। प्राचीन इस्राएल की दसवीं परीक्षा में उन्होंने सीधे कहा, "आओ हम एक प्रधान नियुक्त करें और मिस्र को लौट चलें।" दसवीं और अंतिम परीक्षा में विफलता का कारण उस "समाचार" का अस्वीकार करना था जो आरम्भ से दिए गए समाचार के अनुरूप था, और मिस्र की दासता में लौटने की इच्छा। जब यिर्मयाह ने 1843 की असफल भविष्यवाणी से निराश हुए लोगों का प्रतीकात्मक रूप में प्रतिनिधित्व किया, तब परमेश्वर ने उसे विशेष रूप से बुलाया कि वह परमेश्वर की ओर और उस संदेश के प्रति अपने पूर्व उत्साह की ओर लौट आए, परन्तु यह भी आज्ञा दी कि जिन्हें "बाबुल की पुत्रियाँ" के रूप में पहचाना गया था, उनके पास कभी वापस न जाए।

इसलिए यहोवा यों कहता है: यदि तू लौट आए, तो मैं तुझे फिर से ले आऊँगा, और तू मेरे सामने खड़ा रहेगा; और यदि तू निकृष्ट में से बहुमूल्य को निकाल ले, तो तू मेरे मुख के समान होगा; वे तेरी ओर लौटें, परन्तु तू उनकी ओर न लौट। यिर्मयाह 15:19.

1863 में, जेम्स व्हाइट और उरियाह स्मिथ ने एक नए सरदार को नियुक्त किया ताकि वह उन्हें वापस वहाँ ले जाए जहाँ जाने से उन्हें मना किया गया था। यहोशू और कालेब आगे बढ़ने की इच्छा रखने वालों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि व्हाइट और स्मिथ पीछे लौटने की इच्छा रखने वालों का।

गिनती की पुस्तक के इस खंड से चिन्हित करने योग्य एक और बात यह है कि अंतिम विद्रोह, जो सभी विद्रोहियों को आगामी चालीस वर्षों के दौरान जंगल में मरने के लिए दंडित करता है, बाइबिलीय भविष्यवाणी में “एक दिन एक वर्ष” के सिद्धांत को स्थापित करने वाले दो प्रमुख संदर्भों में से एक है, जो शायद सबसे आवश्यक भविष्यवाणी-संबंधी नियम था और जिसका उपयोग मिलर ने अनन्त सुसमाचार और पहले स्वर्गदूत के संदेश को खोलने के लिए किया। इस नियम की दूसरी बाइबिलीय गवाही यहजेकेल की पुस्तक में मिलती है।

और जब तू उन्हें पूरा कर चुका होगा, तब फिर अपनी दाहिनी करवट लेटना, और तू यहूदा के घराने का अधर्म चालीस दिन तक उठाएगा: मैंने तेरे लिए एक-एक दिन के बदले एक वर्ष ठहराया है। यहजेकेल 4:6.

दिन-बराबर-वर्ष का सिद्धांत स्थापित करने वाले उन दो पदों के संदर्भ में अक्सर जो बात अनदेखी रह जाती है, वह है दोनों पदों का ऐतिहासिक संदर्भ।

जितने दिनों तक तुमने उस देश की टोह ली—अर्थात् चालीस दिन—उतने ही के अनुसार, हर दिन के बदले एक वर्ष, तुम अपनी अधर्मताओं का दण्ड भोगोगे—चालीस वर्ष—और तुम मेरे प्रतिज्ञा-भंग को जानोगे। गिनती 14:34.

गिनती की आयत प्राचीन इस्राएल की शुरुआत के समय की है और परमेश्वर की वाचा के लोगों के विद्रोह को दर्शाती है, और यहजेकेल की आयत प्राचीन इस्राएल के अंत के समय की है और परमेश्वर की वाचा के लोगों के विद्रोह को दर्शाती है। आरंभ में दंड मरुभूमि में मृत्यु था और अंत में दंड उनके शत्रुओं की भूमि में गुलामी था। दिन के बदले वर्ष का सिद्धांत वाचा के लोगों के विद्रोह पर बल देता है। दो दंड थे: एक आरंभ में और एक अंत में, पर दोनों भिन्न थे। पहला दंड मरुभूमि से होकर यात्रा करते समय क्रमशः मरते जाने का था, अंतिम दंड शाब्दिक बाबुल में बंधुआई और गुलामी था।

तब मूसा और हारून इस्राएल की पूरी मण्डली के सामने अपने मुख के बल गिर पड़े। और नून का पुत्र यहोशू, और यपुन्नेह का पुत्र कालेब—जो उस देश की जासूसी करने वालों में से थे—ने अपने वस्त्र फाड़ डाले; और उन्होंने इस्राएल की सारी मण्डली से कहा, जिस देश से होकर हम उसे जाँचने गए थे, वह देश अति उत्तम है। यदि यहोवा हम से प्रसन्न हो, तो वह हमें उस देश में ले जाएगा और उसे हमें दे देगा; वह देश जिसमें दूध और मधु की धार बहती है। केवल तुम यहोवा के विरुद्ध बगावत न करो, और उस देश के लोगों से मत डरो; क्योंकि वे हमारे ग्रास हैं; उनकी रक्षा उनसे हट गई है, और यहोवा हमारे साथ है; उनसे मत डरो। परन्तु सारी मण्डली ने उन्हें पत्थरों से मार डालने को कहा। तब यहोवा की महिमा मण्डली के तम्बू में सब इस्राएलियों के सामने प्रकट हुई। और यहोवा ने मूसा से कहा, यह प्रजा कब तक मुझे चिढ़ाती रहेगी? और मैंने उनके बीच जो सब चिन्ह दिखाए हैं, उनके होते हुए भी वे कब तक मुझ पर विश्वास न करेंगे? मैं उन्हें महामारी से मार डालूँगा, और उन्हें मीरास से वंचित कर दूँगा, और तुझ से उनसे बड़ा और अधिक पराक्रमी राष्ट्र उत्पन्न करूँगा। तब मूसा ने यहोवा से कहा, तब तो मिस्री यह सुनेंगे (क्योंकि तूने अपनी सामर्थ से इस प्रजा को उनके बीच से बाहर निकाला है); और वे यह इस देश के निवासियों से कहेंगे; क्योंकि उन्होंने सुना है कि, हे यहोवा, तू इस प्रजा के बीच में है, कि, हे यहोवा, तुझे आमने-सामने देखा जाता है, और कि तेरा बादल उनके ऊपर ठहरा रहता है, और तू दिन में बादल के खम्भे में और रात में आग के खम्भे में उनके आगे-आगे चलता है। अब यदि तू इस सारे लोगों को एक ही बार में मार डाले, तो वे जातियां जो तेरी कीर्ति का समाचार सुन चुकी हैं, कहेंगी, कि क्योंकि यहोवा इस प्रजा को उस देश में,

जिसकी उसने उन्हें शपथ खाई थी, पहुँचाने में समर्थ न था, इस कारण उसने उन्हें जंगल में मार डाला। और अब, मैं तुझ से विनती करता हूँ, जैसा तूने कहा है, वैसा ही मेरे प्रभु की सामर्थ बड़ी हो: कि यहोवा धीरजवन्त और अति करुणामय है, अधर्म और अपराध को क्षमा करता है, परन्तु दोषी को किसी प्रकार निर्दोष नहीं ठहराता; वह पितरों के अधर्म का दण्ड पुत्रों पर, तीसरी और चौथी पीढ़ी तक देता है। इसलिए, मैं तुझ से विनती करता हूँ, अपनी बड़ी करुणा के अनुसार इस प्रजा के अधर्म को क्षमा कर, और जैसे तूने इस प्रजा को मिस्र से लेकर अब तक क्षमा किया है, वैसा ही अब भी कर। गिनती 14:5-19.

इन आयतों में दर्शाया गया इतिहास एक बाइबिलीय प्रतीक बन गया, जिसे "उकसावे का दिन" कहा जाता है। "उकसावे का दिन" का उल्लेख भजन संहिता 95, यिर्मयाह 32 और इब्रानियों 3 में हुआ है, परन्तु हम इस समय उस प्रतीक पर चर्चा नहीं करेंगे। पिछले खंड में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत चिन्हित किया गया है, जिसे समझना आवश्यक है। यह सिद्धांत भविष्यद्वक्ता शमूएल, लूसिफ़र, एलेन वाइट और, निस्संदेह, इसी खंड में मूसा द्वारा भी चित्रित किया गया है।

और उन्होंने उससे कहा, देखो, तुम बूढ़े हो गए हो, और तुम्हारे बेटे तुम्हारे मार्गों पर नहीं चलते; अब हमारे न्याय करने के लिए हमारे लिए एक राजा नियुक्त कर दे, जैसे सब जातियों के पास होता है। परन्तु जब उन्होंने कहा, हमारे न्याय करने के लिए हमें एक राजा दे, तो यह बात शमूएल को बुरी लगी। और शमूएल ने प्रभु से प्रार्थना की। और प्रभु ने शमूएल से कहा, जो कुछ लोग तुझसे कहते हैं, उनकी बात मान; क्योंकि उन्होंने तुझे नहीं ठुकराया, परन्तु मुझे ठुकराया है, कि मैं उन पर राज्य न करूँ। जिस प्रकार उन्होंने उस दिन से आज तक किया है, जिस दिन मैं उन्हें मिस्र से निकाल लाया—अर्थात् उन्होंने मुझे त्याग दिया और दूसरे देवताओं की सेवा की—वैसा ही वे तेरे साथ भी कर रहे हैं। अब इसलिए उनकी बात मान; तौभी तू उन्हें गंभीरता से चेतावनी दे, और उन्हें उस राजा की रीति दिखा दे जो उन पर राज्य करेगा। तब शमूएल ने जो लोग उससे राजा माँग रहे थे, उन्हें प्रभु के सब वचन बताए। और उसने कहा, यह उस राजा की रीति होगी जो तुम पर राज्य करेगा: वह तुम्हारे बेटों को ले लेगा, और उन्हें अपने लिए, अपने रथों के लिए, और अपने घुड़सवारों के लिए नियुक्त करेगा; और कुछ उसके रथों के आगे-आगे दौड़ेंगे। और वह अपने लिए हजारों के सरदार और पचास-पचास के सरदार नियुक्त करेगा; और उन्हें अपनी भूमि जोतने, अपनी फसल काटने, और अपने युद्ध के हथियार तथा अपने रथों के औज़ार बनाने में लगाएगा। और वह तुम्हारी बेटियों को इत्र बनाने वाली, रसोइया और रोटी पकाने वाली बना लेगा। और वह तुम्हारे खेत, तुम्हारी दाख-बारी और तुम्हारे जैतून के बाग, यहाँ तक कि उनमें से उत्तम भी, ले लेगा और उन्हें अपने सेवकों को दे देगा। और वह तुम्हारी उपज और तुम्हारी दाख-बारी का दशमांश लेगा, और उसे अपने हाकिमों और सेवकों को देगा। और वह तुम्हारे दासों, तुम्हारी दासियों, तुम्हारे सबसे अच्छे जवानों और तुम्हारे गधों को ले लेगा, और उन्हें अपने काम में लगाएगा। वह तुम्हारी भेड़ों का दशमांश लेगा; और तुम उसके दास बन जाओगे। और उस दिन तुम अपने उस राजा के कारण, जिसे तुमने अपने लिए चुना होगा, चिल्लाओगे; परन्तु उस दिन प्रभु तुम्हारी नहीं सुनेगा। तौभी लोगों ने शमूएल की बात मानने से इंकार किया; और वे बोले, नहीं, पर हमारे ऊपर राजा होगा; ताकि हम भी सब जातियों के समान हों, और हमारा राजा हमारा न्याय करे, हमारे आगे-आगे निकले और हमारी लड़ाइयाँ लड़े। और शमूएल ने लोगों की सब बातें सुनीं, और उन्हें प्रभु के सामने कह सुनाया। तब प्रभु ने शमूएल से कहा, उनकी बात मान, और उनके लिए एक राजा नियुक्त कर। और शमूएल ने इस्राएलियों से कहा, तुम सब, हर एक अपनी-अपनी नगर को लौट जाओ। 1 शमूएल 8:5-22.

इस अंश में प्राचीन इस्राएल ने परमेश्वर को अपने राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया, और इतिहास उस समय की ओर संकेत करता है जब उन्होंने घोषित किया कि कैसर को छोड़ उनका कोई राजा नहीं है। उन्होंने परमेश्वर के ईश्वरीय शासन को अस्वीकार किया और इस पर अड़े रहे कि उन्हें अपने ही लोगों में से एक राजा दिया जाए, पर अंततः उन्होंने यही घोषणा की कि उनका राजा रोमी राजा है। अंतिम दिनों में वह रोमी राजा रोम का पोप है।

पर वे चिल्लाकर बोले, उसे हटाओ, उसे हटाओ, उसे क्रूस पर चढ़ाओ। पीलातुस ने उनसे कहा, क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊँ? महायाजकों ने उत्तर दिया, हमें कैसर के सिवा कोई राजा नहीं है। यूहन्ना 19:15.

ईश्वरीय शासन का अस्वीकार शमूएल के लिए इतना अपमानजनक और व्यक्तिगत था कि उन्होंने उसे अपने भविष्यद्वक्ता-पद के अस्वीकार के रूप में समझा। परन्तु परमेश्वर ने यह सुनिश्चित किया कि शमूएल समझ लें कि वे परमेश्वर को अस्वीकार कर रहे थे, न कि भविष्यद्वक्ता को। ये दोनों खंड, जो प्राचीन इस्राएल के विद्रोह के संदर्भ में मूसा और शमूएल के भविष्यवाणी संबंध को प्रस्तुत करते हैं, यह दिखाते हैं कि उस विद्रोह के बाद आया दंड प्राचीन इस्राएल का अंत नहीं था। फिर भी यहोशू और कालेब द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया एक समूह था जो प्रतिज्ञात देश में प्रवेश करेगा, और शमूएल की कथा में, प्राचीन इस्राएल का अंत इस्राएल के राजाओं के युग के अंत में हुआ, प्रारंभ में नहीं।

मूसा ने परमेश्वर से यह दलील दी कि वह प्राचीन इस्राएल के साथ अपना कार्य जारी रखें, क्योंकि मूसा का तर्क था कि उस समय उनका अंत कर देना परमेश्वर की प्रजा की मुक्ति के पवित्र इतिहास और अब्राहम को दी गई उसकी इस प्रतिज्ञा—कि वह उन्हें उस देश में ले जाएगा—का गलत निरूपण होगा। यहाँ बात यह है कि जब परमेश्वर विद्रोह को सत्य की गवाही के रूप में उपयोग करना चाहता है, तो वह विद्रोह को होने भी देता है और चलते रहने भी देता है।

शमूएल द्वारा प्रकट धर्मोचित आक्रोश एलेन व्हाइट द्वारा भी प्रकट हुआ।

हमारे लोगों के बीच मैंने इससे पहले कभी भी उतनी दृढ़ आत्मसंतुष्टि और प्रकाश को स्वीकारने तथा मानने की उतनी अनिच्छा नहीं देखी, जितनी मिनियापोलिस में प्रकट हुई। मुझे दिखाया गया है कि उस सभा में प्रकट हुए जिस भाव को जिन्होंने संजोए रखा, उस दल में से एक भी तब तक फिर से ऐसा स्पष्ट प्रकाश नहीं पाएगा, जिससे वे स्वर्ग से उन्हें भेजे गए सत्य की बहुमूल्यता को पहचान सकें, जब तक कि वे अपना घमंड न झुकाएँ और यह स्वीकार न करें कि वे परमेश्वर के आत्मा से संचालित नहीं थे, बल्कि उनके मन और हृदय पूर्वाग्रह से भरे हुए थे। प्रभु उनके निकट आना चाहता था, उन्हें आशीष देना चाहता था और उनकी पश्चगामिता से उन्हें चंगा करना चाहता था, परन्तु उन्होंने कान न दिया। वे उसी आत्मा से संचालित थे जिसने कोरह, दातान और अबीराम को प्रेरित किया था। इस्राएल के वे पुरुष यह ठान चुके थे कि वे हर उस प्रमाण का विरोध करेंगे जो उन्हें गलत सिद्ध करे, और वे अपने विद्रोह के मार्ग पर लगातार बढ़ते गए, यहाँ तक कि बहुत से लोग बहका लिए गए और उनके साथ मिल गए।

ये कौन थे? न तो कमजोर, न अज्ञानी, न ही अप्रबुद्ध। उस विद्रोह में मंडली के प्रसिद्ध दो सौ पचास प्रधान, यशस्वी पुरुष थे। उनकी गवाही क्या थी? 'मंडली के सब लोग पवित्र हैं, हर एक; और प्रभु उनके बीच में है; फिर तुम प्रभु की मंडली से अपने आप को ऊपर क्यों उठाते हो?' [Numbers 16:3]. जब कोरह और उसके साथी परमेश्वर के न्याय के अधीन नष्ट हुए, तब जिन लोगों को उन्होंने धोखा दिया था, उन्होंने इस चमत्कार में प्रभु का हाथ नहीं देखा। अगली सुबह पूरी मंडली ने मूसा और हारून पर यह आरोप लगाया, 'तुमने प्रभु के लोगों को मार डाला' [verse 41], और मंडली पर महामारी आ पड़ी, और चौदह हजार से अधिक नष्ट हो गए।

"जब मैंने मिनियापोलिस छोड़ने का इरादा किया, तो प्रभु का दूत मेरे पास आ खड़ा हुआ और कहा: 'ऐसा नहीं; परमेश्वर ने इस स्थान में तेरे लिए एक काम रखा है। लोग कोरह, दातान और अबीराम के विद्रोह को दोहरा रहे हैं। मैंने तुझे तेरे उचित स्थान पर रखा है, जिसे जो लोग ज्योति में नहीं हैं, स्वीकार नहीं करेंगे; वे तेरी गवाही पर ध्यान नहीं देंगे; परन्तु मैं तेरे साथ रहूँगा; मेरा अनुग्रह और मेरी शक्ति तुझे सहारा देगी। वे तुझे नहीं, बल्कि उन दूतों और उस संदेश को तुच्छ जानते हैं जिसे मैं अपनी प्रजा के पास भेजता हूँ। उन्होंने प्रभु के वचन का तिरस्कार किया है। शैतान ने उनकी आँखें अंधी कर दी हैं और उनकी न्याय-बुद्धि को बिगाड़ दिया है; और जब तक हर आत्मा अपने इस पाप—यह अपवित्र, असंयमी स्वतंत्रता जो परमेश्वर के आत्मा का अपमान करती है—का पश्चाताप न करेगा, वे अन्धकार में चलेंगे। यदि वे पश्चाताप कर मन न फिराएँ और परिवर्तित न हों, कि मैं उन्हें चंगा करूँ, तो मैं दीवट को उसके स्थान से हटा दूँगा। उन्होंने अपनी आत्मिक दृष्टि को धुँधला कर लिया है। वे नहीं चाहते कि परमेश्वर अपना आत्मा और अपनी शक्ति प्रकट करे; क्योंकि उनमें मेरे वचन के प्रति उपहास और घृणा की आत्मा है। हल्कापन, तुच्छता, ठिठोली और परिहास प्रतिदिन किए जाते हैं। उन्होंने मुझे ढूँढ़ने के लिए अपना हृदय नहीं लगाया है। वे अपनी ही सुलगाई हुई चिंगारियों के प्रकाश में चलते हैं, और यदि वे पश्चाताप न करें तो वे

दुख में पड़े रहेंगे। प्रभु यों कहता है: अपने कर्तव्य के स्थान पर स्थिर रह; क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, और न तुझे छोड़ूँगा और न त्यागूँगा।' परमेश्वर के इन वचनों की मैंने उपेक्षा करने का साहस नहीं किया।" 1888 की सामग्रियाँ, 1067.

बहन व्हाइट ने शमूएल के रवैये जैसा ही रुख अपनाया, और उसे विद्रोहियों और उनके विद्रोह के बीच बने रहने तथा अपने "कर्तव्य" की "चौकी" पर "डटे रहने" के लिए कहा गया। उसने (भविष्यवक्त्री) जब यह निश्चय कर लिया था कि वह विद्रोहियों और उनके विद्रोह को उनके हाल पर छोड़ देगी, तब भी उसे अपनी चौकी पर डटे रहने की आज्ञा दी गई।

प्रथम उल्लेख का नियम, जो अल्फ़ा और ओमेगा के सिद्धांत का एक मुख्य घटक है, यह बताता है कि किसी विषय का पहला उल्लेख सर्वोच्च महत्व का होता है। लूसिफ़र के विद्रोह की बिल्कुल शुरुआत से जुड़ा यह तथ्य था कि यदि परमेश्वर चाहते, तो उनके पास वह समस्त शक्ति थी कि लूसिफ़र के मन में उत्पन्न हुए उसके सर्वप्रथम स्वार्थी विचार के समय ही वे लूसिफ़र को समाप्त कर देते। परमेश्वर लूसिफ़र को सृष्टि से हटा सकते थे, और उनके पास ऐसी शक्ति है कि यदि वे ऐसा चुनते, तो वे इसे इस प्रकार करते कि अन्य किसी स्वर्गदूत को यह भी पता न चलता कि क्या हुआ। निस्संदेह, उन्होंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि अन्य बातों के अलावा यह उनके चरित्र का निषेध होता; परंतु उनके पास वह सृजनात्मक शक्ति अवश्य है जो उन्हें वही करने की अनुमति देती। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने धैर्यपूर्वक उस विद्रोह को अपने चरित्र की गवाही का हिस्सा बनने दिया, उस विवाद की साक्षी का हिस्सा जो स्वर्ग में आरंभ हुई थी और जो अंततः पृथ्वी पर आना था। प्राचीन इस्राएल के लिए मूसा के संवाद ने यही कार्य किया। परमेश्वर ने विद्रोहियों की उस पीढ़ी को जंगल में मरने दिया और उस इतिहास का उपयोग अनन्त सुसमाचार से संबंधित सच्चाइयों को आगे बढ़ाने के लिए एक बाइबिलीय उदाहरण के रूप में किया।

इसी प्रकार, शमूएल के दिनों में जब परमेश्वर को राजा के रूप में अस्वीकार किया गया, तब भी यही बात थी। शमूएल को उसके निजी विश्वासों और भविष्यसूचक ज्ञान के बावजूद, आगे बढ़कर अपने कर्तव्य के पद पर खड़ा रहने का निर्देश दिया गया था। परमेश्वर की भविष्यवाणीपूर्ण और ऐतिहासिक देखरेख का यही तत्व बाबुल की बंधुवाई के बाद मंदिर के पुनर्निर्माण में भी दिखाई देता है। परमेश्वर ने सत्तर वर्षों की बंधुवाई के हर पहलू की भविष्यवाणी की और उसे संचालित किया—यरूशलेम में वापसी, यरूशलेम का पुनर्निर्माण, मंदिर, और उसकी गलियों और दीवारों तक। उन्होंने ऐसी समय-संबंधी भविष्यवाणियाँ दीं जिनसे यह निर्धारित होता था कि वे बंधुवाई से कब मुक्त होंगे। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि तेईस सौ वर्षों की शुरुआत को चिह्नित करने के लिए कितने फरमान होंगे। उन्होंने साइरस का नाम लेकर उस अन्यजाति राजा की पहचान कर दी, जो प्रथम फरमान के साथ इस प्रक्रिया का आरंभ करेगा। यरूशलेम और मंदिर के पुनर्निर्माण के सभी पहलुओं को स्पष्ट रूप से बताया गया, और उस कार्य को पूरा करने के लिए उन्होंने धर्मी पुरुषों और नबियों को उठाया।

सारी स्पष्ट दिव्य भविष्यसूचक पूर्वज्ञान और हस्तक्षेप के बावजूद, जिस विद्रोह के कारण बाबुल में निर्वासन हुआ था, उसने परमेश्वर की प्रजा के साथ उसकी प्रत्यक्ष उपस्थिति का पहले ही अंत कर दिया था। जो मंदिर पुनर्निर्मित किया गया था, उसमें शेखीना महिमा कभी वापस नहीं लौटी। पूरे इतिहास का उपयोग संसार के अंत के इतिहास को भविष्यसूचक संरचना देने के लिए किया गया, यद्यपि मंदिर को महापवित्र स्थान में शेखीना की उपस्थिति का आशीर्वाद फिर कभी नहीं मिला। उस अर्थ में, पुनर्निर्मित मंदिर परमेश्वर की उपस्थिति की नहीं, बल्कि इस्राएल के विद्रोह की गवाही था। फिर भी, उस इतिहास के भविष्यद्वक्ताओं ने, जैसे शमूएल और मिनियापोलिस में सिस्टर वाइट, भविष्यद्वक्ताओं के रूप में सेवा करना जारी रखा।

लूसिफ़र का विद्रोह मसीह और शैतान के बीच महान संघर्ष में उल्लेखित पहली बात है, और परमेश्वर ने अपने ही उद्देश्यों के लिए उस विद्रोह को जारी रहने दिया। शमूएल, अन्य राष्ट्रों के समान होने की इस्राएल की इच्छा के विरुद्ध अपने धर्मसंगत आक्रोश के बावजूद, पहले दो राजाओं के अभिषेक में भाग लेने के लिए निर्देशित किया गया। और परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर के मंदिर के पुनर्निर्माण में भाग लिया, उस मंदिर के जिसे फिर कभी परमेश्वर

की शेखीना उपस्थिति नहीं होनी थी।

जो लोग 1863 में एडवेंटवाद के विद्रोह को छिपाने के प्रयास में भविष्यवाणी के वचन के विरुद्ध अपनी "कथाओं के पकवान" परोसते हैं, और जो यह तर्क देते हैं कि यदि 1863 में कुछ भी गलत हुआ होता तो भविष्यद्वक्त्री उसे रोक देती, वे उस प्रथम सिद्धांत से जान-बूझकर अनभिज्ञ हैं जो ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह के सबसे पहले उल्लेख में पहचाना जाता है। ईश्वर अपने उद्देश्यों के लिए विद्रोह को होने देता है, और यदि वह यह चुनता है कि उसके भविष्यद्वक्ता आने वाले विद्रोहों में तटस्थ या मौन रहें, तो यह उसका ही निर्णय है।

जब हम 1844 से 1863 तक की परीक्षण-प्रक्रिया पर विचार करना शुरू करते हैं, जिसका प्रतिरूप उन दस परीक्षाओं से लिया गया है जिनमें प्राचीन इस्राएल लाल सागर पार करने के बाद असफल रहा, तब इस बाइबिलीय तथ्य को समझना आवश्यक है। परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता आज्ञाकारिता और अवज्ञा—दोनों समयों में—उसी के भविष्यद्वक्ता के रूप में कार्य करते हैं, और कभी-कभी वे उन मुद्दों का भी विरोध नहीं करते जो ऊपर से देखने पर ऐसे प्रतीत होते हैं जिन पर किसी भविष्यद्वक्ता से विरोध की अपेक्षा की जाती है। कभी-कभी वे विद्रोह से स्पष्टतः अवगत होते हैं, पर उन्हें रोके रखा जाता है; और अन्य समयों में विद्रोह के संबंध में प्रभु उनकी आँखों पर अपना हाथ रख देता है। जब उस दृष्टिकोण को पहचाना जाता है, तो 1863, बाइबल की भविष्यवाणी के छठे राज्य के इतिहास में, प्रोटेस्टेंटवाद के सींग और गणतंत्रवाद के सींग दोनों के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर बन जाता है।

मैंने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा भी बात की है, और अनेक दर्शन दिखाए हैं, और भविष्यद्वक्ताओं की सेवकाई के द्वारा उपमाओं का प्रयोग किया है। होशे 12:10.